क्रं. –75, 15/09/2017

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय
Indira Gandhi Krishi Vishwavidyalaya
शहीद गुंडाधूर कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र
Shaheed Gundadhoor College of Agriculture & Research Station
कुम्हरावण्ड, जगदलपुर – 494001 Kumhrawand, Jagdalpur – 494001 (C.G.)
Ph. (O) - 07782 - 229150 (Fax) 229360 (R) 229343 Email - zars_igau@rediffmail.com

क्र./श.गु.कृ.महा.एवं अनु.केन्द्र/2017–18/ GKMS *जगदलपुर, दिनांक 15/09/2017*

बस्तर पठार कृषि जलवायु क्षेत्र के लिए कृषि सलाह सेवा बुलेटिन (13 से 15 सितम्बर 2017)

पिछले सप्ताह की विशिष्ठ मौसम स्थितियाँ

वर्षा मि.मी.	87.6
अधिकतम तापमान डिग्री. से.	29.5 - 30.2
न्युनतम तापमान डिग्री. से.	21.7 - 22.1
सापेक्ष आर्द्रता प्रतिशत	85 - 98
वायु गति कि.मी./घंटा	1.7 - 3.8

पिछले सप्ताह कृषि मौसम वेधशाला, कुम्हरावण्ड में मि.मी. **87.6** वर्षा दर्ज की गई। अधिकतम तापमान **29.5** से **30.2** डिग्री सेंग्रे. के बीच रहा। न्यूनतम तापमान **21.7** से **22.1** डिग्री सेग्रे. के मध्य रहा। सापेक्ष आर्द्रता **85** से **98** प्रतिशत के मध्य दर्ज की गई। वायु गति **1.7** से **3.8** किमी./घंटा के मध्य रही।

16 से 20 सितम्बर 2017 तक मौसम पुर्वानुमान सुकमा

मौसम कारक	पुर्वानुमान				
	दिवस –1 16 सितम्बर	दिवस –2 17 सितम्बर	दिवस –3 18 सितम्बर	दिवस –4 19 सितम्बर	दिवस –5 20 सितम्बर
वर्षा मि.मी.	**25**	**15**	**25**	**25**	**24**
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रें)	30	31	31	31	31
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रें)	21	21	21	22	21
कुल बादल की मात्रा (प्रतिशत)	87.5	87.5	87.5	100	100
सापेक्ष आर्द्रता (सुबह/शाम)	95/80	95/80	96/80	97/85	97/85
वायु गति कि. मी./घण्टा एवं दिशा	2/SE	2/SE	4/S	4/W	4/W

भारत मौसम विज्ञान विभाग रायपुर द्वारा जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आने वाले **5** दिनो में छत्तीसगढ़ के बस्तर पठारी भाग में हल्की मध्यम बारिश होने एवं बादल छायें रहने की तथा हवा में **80 से 97** प्रतिशत नमी होने की संभावना है। अधिकतम तापमान लगभग **30 से 31**°C रहने की संभावना है एवं न्यूनतम तापमान **21** से **22**°C के बीच दर्ज किए जाने की संभावना है। आने वाले दिनो में हवा **दक्षिण –पश्चिम्** एव **दक्षिण–पूर्व** दिशा से चलने की संभावना है, तथा इसकी गति लगभग **2** से **4** किलोमीटर/घंटा रहने कि संभावना है।

मौसम आधारित कृषि सलाह

<table>
<tr><td>बीजोपचार</td><td>खरीफ मौसम के फसलो के बीजों का बीजोपचार जरूर करें।
➢ (क) अदैहिक दवायें:– इन दवाओं से उपचारित करने पर सभी फसलों के बीज सतह पर मौजूद फफूंद नष्ट जाती है। इनमें प्रमुख थीरम, केप्टान, डायथेन एम–45। इन दवाओं की 3.5 ग्राम मात्रा प्रति किलो बीज की दर से उपयोग करें।
➢ (ख) दैहिक दवायें:– इन दवाओं से उपचारित करने से बीज के भीतर मौजूद फफूंद नष्ट हो जाती है साथ ही यह बीजांकुर को भी 15–20 दिनों तक रोगों से सुरक्षा प्रदान करती है। इनमें मुख्यतः वीटावैक्स एवं बाविस्टिन का उपयोग 2 से 2.5 ग्राम मात्रा प्रति किलो बीजदर से उपयोग में लाना चाहिए।
➢ (ग) जैव उत्पाद (बायोएजेन्ट) – ट्राइकोड्रमा हारजियनम या ट्राइकोड्रमा स्पीजीज6–8 ग्राम प्रति किलोग्राम बीजदर से उपचारित करे तथा आवश्यकता होने पर जीवाणु स्यूडोमोनास फ्यूरोसेन्स से भी बीजोपचार करे।</td></tr>
<tr><td>खरीफ फसल</td><td>❖ जल्दी पकने वाली कस्मों की कटाई पश्चात् तोरिया क बुवाई करें।
❖ सभी प्रकार के माहो कीट नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड का 0.5 मिली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर उपयोग करें।
❖ पिछले 5 दिनों मे 95.1 मिमि. वर्षा हुआ है। वर्षा जल को एकत्रित करने का प्रयास करें ताकि रबी फसल की सिंचाई कर सके। फसलों में पानी की कमी हाने पर नाले, तालाब एवं डबरी से सिंचाई व्यवस्था करें एवं रबी फसलों के लिए सिंचाई की व्यवस्था हो सके।
❖ रागी के फसल में ब्लास्ट का प्रकोप देखा जा रहा है, इसके नियंत्रण के लिए प्रारम्भिक अवस्था में कार्बेण्डाजिम 0.1 प्रतिशत या मेंकोजेब 0.2 प्रतिशत छिड़काव करें या ट्राइसाइक्लाजोल 0.06 प्रतिशत इसी दवा का 50 प्रतिशत पुष्पन के समय व दूसरा छिड़काव इसके 10 दिन के बाद करने पर गर्दन व दोनों में लगी झुलसा को नियंत्रित किया जा सकता है। जैव कारक स्यूडोमोनास फ्यूरोसेन्स का भी उपयोग कर सकते है।
❖ धान खेतों का खरपतवार मुक्त कर एवं अंतिम Split Dose के रूप में बची हुई यूरिया की मात्रा का छिड़काव करें
❖ सभी खेतों में नमी संरक्षित करें। जहॉ सम्भव हो सके सब्जियों में पलवार का उपयोग करे।
❖ बंकी एवं पत्ती मोड़क कीट के नियंत्रण के लिये क्लोरापायरीफॉस 2मि.ली./ली. पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
❖ धान एवं लघु धान्य फसलों मे झुलसा (ब्लास्ट) रोग के लक्षण दिखाई देने पर ट्राइसाइक्लाजोल 100 ग्राम प्रति एकड़ की दर से छिड़के।
धान की फसल के लिए पोषक तत्वों (नत्रजन स्फूर व पोटाश)की मात्रा (कि.ग्रा./हे.)
<table><tr><th>क्र.</th><th>धान की अवधि</th><th>नत्रजन</th><th>स्फूर</th><th>पोटाश</th></tr></table></td></tr>
</table>

<table>
<tr><td></td><td>
<table>
<tr><td>1</td><td>80 – 100</td><td>40–60</td><td>20–40</td><td>10–15</td></tr>
<tr><td>2</td><td>101 से 125 (बौनी फसल)</td><td>60–80</td><td>30–40</td><td>15–20</td></tr>
<tr><td>3</td><td>126 से 140</td><td>80–100</td><td>40–50</td><td>20–25</td></tr>
<tr><td rowspan="3">4</td><td colspan="4">141 से अधिक</td></tr>
<tr><td>● बौनी किस्में</td><td>80–100</td><td>40–50</td><td>20–25</td></tr>
<tr><td>● ऊंची किस्में</td><td>40–60</td><td>20–30</td><td>10–15</td></tr>
</table>
स्फूर एवं पोटाश का उपयोग आधार पर करें एवं यूरिया खाद को 3 भाग में बाटकर उपयोग करें।
</td></tr>
<tr><td>फल वाली फसलें</td><td>❖ काजू के अनुशंसित किस्म वी–4, इंदिरा काजू–1 के कलमी पौधों का रोपण करें।
❖ काजू पौधें में थाला बनाकर खाद का उपयोग करें।</td></tr>
<tr><td>कन्दीय फसलें</td><td>❖ कन्द फसलों के खेतों में जल निकास की उचित व्यवस्था करें।
❖ नागर कन्द, डांग कन्द, कसावा, शकरकन्द एवं तिखुर में नत्रजन की तिसरी खुराक खेत में निदाई–गुड़ाई करने के पश्चात् देवें।
❖ वर्तमान में अरबी (कोंचई) के फसल में फाइटोक्योरा झुलसा रोग का प्रकोप देखा गया है, इसके नियंत्रण हेतु रिडोमिल नामक फफूंदनाश दवा का 2 ग्राम प्रति ली. पानी की दर से 15 दिनों के अन्तराल पर छिड़काव करें।
❖ कन्दीय फसलों में निदाई–गुड़ाई करे तथा खाद डालकर मिट्टी चढ़ायें एवं जल निकास की व्यवस्था करें।</td></tr>
<tr><td>सब्जी</td><td>❖ सब्जियों जैसे बैंगन, टमाटर, सेम, बरबट्टी, कदूवर्गीय में तना सड़न एवं जड़न होने की स्थिति में पानी निकासी का उचित प्रबंध करें एवं सब्जीयों की नर्सरी मे फफूंदी जनित रोगों जैसे आर्दगलन इत्यादी से बचाव हेतु बाविस्टिन या मान्कोजेब या बाविस्टिन+मान्कोजेब का 1.5–2 ग्राम/ ली. पानी की दर से उपयोग करें।
❖ भिण्डी एवं बरबट्टी में तना छेदक एवं फल भेदक का प्रकोप होने पर इसके नियंत्रण हेतु 1 से 1.5मिली. क्लोरोपायरीफास का छिड़काव करें।
❖ सब्जियों में मैनी, तैला एवं चैंपा का आक्रमण होने पर पीला प्रपंच लगाये साथ ही डायमेथोएट का 1.5 मि.ली./लिटर पानी की दर से छिड़काव कर सकते है।</td></tr>
<tr><td>पशुपालन</td><td>❖ कृमिनाशक का उपयोग प्रत्येक तीन माह के अन्तराल पर मुर्गीयों को कृमि रोग से मुक्त करने के लिये करें।
❖ यथा सम्भव पशुवाड़े को सुखा रखे। जिससे कि कीट एवं बीमारियों से बचाव के साथ–साथ पशुओं एवं पशुपालक के फिसलने से भी बचाव हो सके।</td></tr>
</table>

प्रयोजक – भारतीय मौसम विभाग (भूमि विज्ञान मंत्रालय), नई दिल्ली, सहयोग–अखिल भारतीय समन्वित बारानी खेती परियोजना, हैदराबाद

अधिष्ठाता

14 Sept 2017

Chhattisgarh

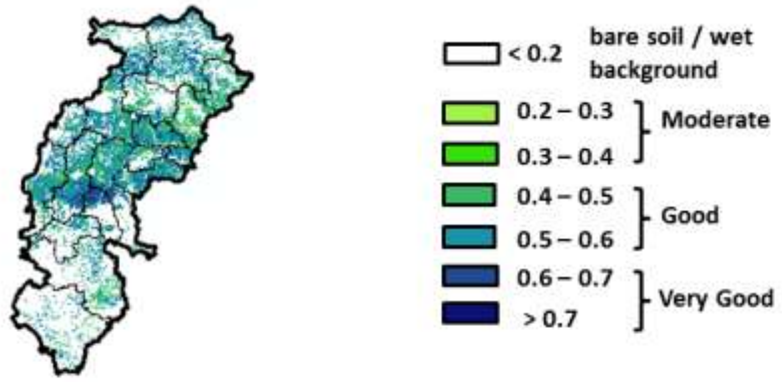

Agriculture vigour is good in some patches in Northern and central part of the state and is moderate over rest of the state.